शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
E ISSN 2320 – 0871
17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'मोर्चे' उपन्यास में स्त्री संघर्ष

लक्ष्मी देवी (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू, भारत

शोध संक्षेप

प्राचीनकाल में भारत में स्त्रियों को बहुत मानसम्मान प्राप्त था। उन्हें पुरुषों के समान अधिकार मिले हुए थे अनेक विदुषी स्त्रियों ने वेद मन्त्रों की रचना की है। मनु स्मृति में कहा गया जहां नारी की पूजा होती है वहां देवताओं का वास होता है। मध्यकाल तक आते-आते स्त्रियों की स्थिति दोयम दर्जे की हो गयी। समाज में अनेक बुराईयाँ घर कर गयीं। स्त्रियों की स्वतंत्रता को छीन लिया गया। आधुनिक काल में समाज सुधारकों ने स्त्रियों की मुक्ति के लिए अनेक आन्दोलन चलाये। परिणामस्वरूप स्त्री की दशा में कुछ सुधार दिखाई देता है। इसके बावजूद आज भी स्त्रियों पर सर्वाधिक अत्याचार किये जाते हैं। इन्हें साहित्यकारों ने नजदीक से देखा और स्त्रियों की पीड़ा और दुःख को लेकर अनेक उपन्यास लिखे। जिनमें यथार्थ के धरातल पर स्त्रियों का चित्रण किया गया है। प्रस्तुत शोध पत्र में सुषम बेदी के 'मोर्चे' उपन्यास में स्त्री के संघर्ष का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

भूमिका

वर्तमान युग में नारी कहने के लिए हर क्षेत्र में पहुँच गई है डाक्टर, इंजिनियर, टेलिविजन, मीडिया, पत्रिका, हवाई जहाज में भी वह सफल और प्रसन्न दिख रही है पर असलियत में यह हँसी नए जमाने का घुंघट बन चुका है। स्त्री का असली दर्द उसके ढके हुए चेहरे में है। अगर हम इनकी शिक्षा की बात करें तो इस क्षेत्र में भी इनका पारिवारिक दायित्व, मातृत्व की भूमिका इन पर हावी हो जाती है। भले ही हमारे देश की सरकार स्त्रियों के लिए कई योजनाओं को लागू करे, परन्तु यह समाज इन्हें सम्मान रूप से पुरुषों के बराबर अधिकार देने में, इनके घर के बाहर जाकर शिक्षण स्थानों पर कार्य करने में अपनी नकरात्मक सोच ही रखता है। एक स्थान पर अनामिका लिखती हैं, "रहेगी नहीं तो जाएगी कहाँ - भारतीय पतियों का एक आम नारा है।"[1] पुरुष का यही प्रयास रहता है कि वह स्त्री को कैसे बेड़ियों में कैद कर सके ? उसके पंख काट सके ? पुरुषों की यही छोटी सोच सदा से ही स्त्रियों को दोयम दर्जा देती आई है। स्त्री विमर्शकार अनामिका ने कहा है, "खुदा और बंदे का रिश्ता नहीं जानती औरत, मगर यौनेतर, निरपेक्ष दोस्ती का रिश्ता तो चाहती है। पहले इस लायक तो हो जाइए कि स्त्री आपके साथ आश्वस्त और सुरक्षित महसूस करे, उसे ऐसा लगे कि वह मनुष्य के साथ जी रही है, मर्द के साथ नहीं, जो कभी भी उस पर झपट सकता है या उसके साथ लटपट बतिया सकता है।"[2]

नारी और संघर्ष एक सिक्के के दो ऐसे पहलू हैं जो हमेशा साथ रहते हैं या यूँ कहें कि संघर्ष के बिना स्त्री अधूरी है। नारी को हर कदम संघर्ष करना पड़ता है और यही समाज की स्त्री के प्रति यथार्थता है। इसकी सार्थकता के लिए सुषम बेदी

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के उपन्यास 'मोर्चे' में संसार की आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करने वाली स्त्रियों के स्वर को तीव्रता से उभारा गया है। गौरतलब यह है कि जब साहित्य में स्त्री विमर्श का प्रवेश नहीं हुआ था, उस समय स्त्रियाँ अपने-अपने ढंग से घरेलू उत्पीड़न के विरुद्ध बगावती तेवर अख्तियार कर लेती हैं और पुरुषों के अत्याचारों के खिलाफ मोर्चा खोल देती हैं। एंगेल्स लिखते हैं, "वह पुरुष की वासना की दासी संतान उत्पन्न करने का एक मात्र यंत्र बनकर रह गयी है।"[3]

'मोर्चे' उपन्यास में स्त्री संघर्ष

मोर्चे उपन्यास की कहानी एक तनु नाम की लड़की के इर्द गिर्द घूमती है जो उच्च शिक्षा प्राप्त डॉक्टर है और तनु डॉक्टर होने के साथ-साथ बुद्धिमान भी है। परन्तु यह बुद्धिमान स्त्री भी धोखे और शोषण का शिकार बनती है। उसका प्रेमी उससे प्रेम का ढोंग रचकर उससे विवाह करता है ताकि वह उसका फायदा उठा सके। लड़की मूल रूप से भारतीय है और उसे अमरीका की नागरिकता भी प्राप्त है। लड़की अपनी डाक्टरेट की पढ़ाई भारत में पूरी करती है। हम यह भी नहीं कह सकते कि लड़की अनपढ़ थी या कम पढ़ी लिखी थी, इसलिए वह शोषण का शिकार हुई। बल्कि इस उपन्यास में सुषम बेदी एक ऐसी लड़की को सामने लेकर आयी है जो उच्च स्तरीय शिक्षा प्राप्त कर विदेश में जीवनयापन करना चाहती है।

लड़की के साथ-साथ उसका परिवार भी धोखे का शिकार बनता है। लड़का बड़ी होशियारी से उससे प्रेम प्रसंग चलाता है और फिर उससे विवाह करता है। वह उससे प्रेम नहीं करता अपितु वह केवल ग्रीन कार्ड पाने के लिए अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए उसे कठपुतली बनाता है, ताकि उस पर पाँव रख कर वह अपने सपने पूरे कर सके। उसे पत्नी के स्वाभिमान, उसकी सोच, उसके जीवन, सुख-दुख से कोई मतलब नहीं, सिर्फ अपने लोभ से मतलब रखता है। पूरा ताना-बाना बुनकर बड़ी ही चालाकी से लड़का उसे प्यार के जाल में फँसाता है और यही समसमायिक परिस्थितियाँ आज हमारे समाज की बनी हुई हैं। न जाने कितनी मासूम लड़कियाँ इस धोखे का शिकार बनती जा रही हैं। तनु भरभराकर रो पड़ी। उसके पास कोई शब्द नहीं था। उसका अपना प्रेमी उसका होने वाला पति ही उससे बलात्कार कर रहा था तो वह किससे कहे।"[4]

तनु का होने वाला पति उसका प्रेमी उससे बलात्कार करता है, ताकि विपरीत परिस्थितियों में भी वह उसे छोड़ न सके। किसी दूसरे पुरुष से वह विवाह न कर सके। न चाहते हुए भी तनु उसी का चुनाव करती है। जो बार-बार उसकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ करता है। वह सत्य से अवगत है कि उसका प्रेमी कहीं-न-कहीं अनेक लड़कियों के सम्पर्क में है, परन्तु यह सब जानकर भी वह उसे पागलों की तरह प्रेम करती है। लड़के की नीच मानसिकता के लिए कहीं-न-कहीं उसका परिवार भी जिम्मेदार है, क्योंकि उसके परिवार में स्त्री का कोई स्वाभिमान नहीं, वह भोग्या है। उनका परिवार पुरुषसत्तात्मक है। उनके यहाँ स्त्री पर हाथ उठाना आम बात है। लड़के की दादी अपनी बहु से कहती है "अब रोणे-धोणे की क्या बात है। मरद तो दूसरी औरतों के पास जाते ही हैं।"[5]

उपन्यास की नायिका तनु अनुज के प्रेम में ऐसी बंधी है कि वह उससे विवाह कर लेती है किन्तु पति हमेशा उसे हीन दृष्टि से देखता है और स्वयं को उससे अधिक प्रतिभाशाली मानता है। वह प्रत्येक दिन पति द्वारा हिंसा का शिकार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 सितम्बर 2021
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

बनती है, उसे बेरहमी से पीटा जाता है। अपने हक के लिए वह लड़ना चाहती है पर उसे हर बार प्रताड़ित किया जाता है। उसका पति कहता है, "बोल करेगी मेरा मुकाबला। जान निकाल के धर दूंगा चली है मेरी बराबरी करने। शीशे में मुँह देखा है अपना बेशक्ल! बदसूरत! पागल! वेश्या।"[6] इससे यह स्पष्ट है कि यदि एक डॉक्टर स्त्री अपने पति द्वारा प्रताड़ित की जा सकती है ऐसी स्थिति में एक अनपढ़ स्त्री की क्या दशा हो सकती है ?

अनुज ने प्रेमी बनकर उसकी संवेदनाओं को खंडित किया और बाद में पति बनकर तनु को हर समय प्रताड़ित किया और जब वो पिता बन चुका है तब वह बच्चों के सामने उनकी माँ को बेइज्जत करता है। तनु सब सह लेती है। वह नहीं चाहती उसके बच्चों से उसका बाप दूर हो। "जिस तरह मुझ से मेरे पापा छिन गए मैं नहीं चाहती इन बच्चों का बाप भी इनसे छिने। नहीं मैं अलग नहीं होना चाहती। ठीक हो जाएगा, किसी तरह निभा लूंगी।"[7]

सुषम बेदी भारतीय नारी की सोच पर कटाक्ष करती है जो मजबूरी के कारण हिंसक और चरित्रहीन पति के साथ जीवन बिताने के लिए बाध्य है। जो पुरुष से शोषण झेलकर भी उसी के साथ अपना जीवन का निर्वाह चाहती है। पुरुष औरत को निर्बल, कमजोर और साहसहीन मानकर उस पर बल प्रयोग करता है और उसी के सामने अन्य स्त्रियों से सम्बन्ध स्थापित करता है। अनुज तनु को धमकी देते हुए कहता है, "जिससे मन आएगा करूँगा। तू होती कौन है मुझे रोकने वाली। आई हेट यू। यू अगली वूमन।"[8] तनु बहुत दुखी है। उसका परिवार उसको पति से तलाक की सलाह देते हैं। तो वह कहती है, "तलाक का धब्बा लगने के बाद क्या जिंदगी रह जाएगी औरत की। हर कोई तो दुत्कारता है। समाज में कोई स्थान ही नहीं रहता।"[9]

एक दिन तनु का पति अपने हिंसात्मक रूप की हद पार कर जाता है वह तनु को इतनी बेरहमी से मारता है, पीटता है कि वह अस्पताल पंहुच जाती है। उसकी हैसियत अनुज के घर में नौकरानी के बराबर की है। वहाँ पुलिस कार्यवाही होती है और अनुज जेल पहुँच जाता है। परन्तु घर पर उसे सास ससुर द्वारा मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जाता है। सास कहती है, "तूने तो मेरे पुत्तर को बड़ा दुख दिया है। तू क्या समझती है। हम कोई तेरे कंट्रोल में हैं, लड़के वाले हैं हम। हिंदुस्तान में होती तो अभी पेट्रोल डालकर तुझे फूँक देती। फिर पता भी नहीं चलना था तेरा। आई बड़ी पुलिस बुलाने वाली।"[10]

जब हम समाज के संदर्भ में बात रखते हैं तो स्त्री एक सामाजिक इकाई है और उसकी सामाजिक अस्मिता होती है। इसलिए यह मानना मुश्किल है कि प्राकृतिक विवशताएँ स्त्री के शोषण या दमन के लिए उत्तरदायी हैं। पुरुष शक्ति ही स्त्री पर अत्याचार और शोषण करना अपना पुरुषार्थ समझती है। अनुज का तनु पर बार-बार हाथ उठाना आम बात बन चुकी थी। वह आए दिन पुलिस स्टेशन में हाजिरी देने पहुंच जाता था, परन्तु अपने कृत्य पर उसे कोई पछतावा नहीं था।

पितृशक्ति के विरोध में स्त्री मातृसत्ता को स्थापित करने की वकालत करती है। पर वहाँ भी उसे हार का मुँह देखना पड़ता है। वह पति द्वारा छोड़ी जा चुकी है और अब वह उसे और बच्चों को जीविकापार्जन के लिए खर्चा नहीं देना चाहता। तनु स्वयं को कोसती है कि उसने अनुज के प्रेम में स्वयं को मिटा दिया। वह शीर्ष पर थी पर उसने उसे धरातल पर पटक दिया। तनु जो

आज एक महत्त्वपूर्ण और इज्जतदार डाक्टर या सांईटिस्ट हो सकती थी। अब उसकी यह हालत हो गई है कि रोटी और दूध के लिए भी उसके पास पैसे नहीं हैं। ऐसी शर्मनाक जिंदगी कि बच्चे दाने-दाने को तरसने लगे।

डाइवोर्स होने के बाद अनुज तनु को और तकलीफ देने के लिए बच्चों की कस्टडी लेना चाहता है ताकि तनु लाचार और विवश होकर अपना जीवन त्याग दे। वह अपनी पुरुषवादी सोच को विजयी करने के लिए उसे हर मोर्चे पर हराना चाहता है, जिसके लिए उसने हर सम्भव प्रयास किया ताकि तनु टूट जाए। तनु आर्थिक रूप से तंग थी, क्योंकि उसने परिवार को प्राथमिकता दी और अपनी डॉक्टरी पर ध्यान नहीं दिया। एक पति ने पत्नी से जीतने के लिए अपनी पत्नी को पागल साबित कर दिया ताकि उसकी पत्नी घुट-घुट कर मर सके। "अनुज जानता है कि बच्चों के बिना मेरी जिंदगी गर्क हो जाएगी इसलिए वह मुझे पागल ठहराकर बच्चे मुझसे छीनना चाहता है।"[11]

अब तनु के अन्दर बदलाव ने कदम रखा है, वह स्वयं के विषय में सोचने लगी है और अपनी इसी सोच को वह अपनी माँ से साझा करती है। वह कहती है अगर एक मर्द दूसरी औरतों के पास जा सकता है तो मैं क्यों नहीं अपनी पीड़ा की दवाई ढूंढ सकती हूँ?

ममी आप बदलती क्यों नहीं। यहाँ सारी औरतें इसी तरह शादी करती हैं। अब मैं वह तन नहीं। अब मैं तलाकशुदा औरत हूँ। मेरे कष्ट की कुछ तो दवा भी तो हो न।

बच्चे को देश का भविष्य और निर्माता माना जाता है पर कभी-कभी कठोर परिस्थितियों के कारण इनकी मासूमियत दफन हो जाती हे। तनु और अनुज के आपसी अलगाव में गौरव और शिशु ही पिसते हैं। दोनों बच्चे माँ के सान्निध्य में रहना चाहते हैं पर पिता की जिद्द के कारण न चाहते हुए भी उन्हें उनके पास जाना पड़ता है। वह तनाव से ग्रस्त हो चुके हैं। इसका प्रभाव उनकी शिक्षा पर भी पड़ता है। तनाव की अधिकता के कारण गौरव आत्महत्या करना चाहता है। वह माँ से कहता है "आई वॉंट टू डाई। आई डोंट डिसर्व टू लिव।"[12]

तनु लगातार हमें साहसी और कर्मठ चरित्र का परिचय देती है। अनुज ने अनेक प्रकार के षड़यंत्र रचकर तनु को बच्चों से अलग कर दिया पर तनु ने हिम्मत नहीं हारी। वह पितृसत्तात्मक केंद्र को झेलते हुए भी अदम्य जिजिविषा से भरी है। एक माँ की ममता और विवषता दोनों परिस्थितियों में वह डटकर लड़ती है और विजय भी प्राप्त करती है। तनु कठोर परिश्रम के साथ अनेक औरतों के लिए पथ-प्रदर्शक की राह बुनती है। वह अब एक सम्मानित डॉक्टर बन चुकी थी और आर्थिक रूप से भी सम्पन्न थी। उसने अनेक संस्थाओं में जाकर भाषण दिए और अपनी आत्मकथा सुनाकर महिलाओं को प्रेरित किया।

निष्कर्ष

आलोच्य उपन्यास में सुषम बेदी ने स्त्री पर होने वाले अत्याचार और स्त्री के संघर्ष का जीवंत चित्रण किया है। समाज में केवल एक तनु नहीं है बल्कि भारतीय समाज में ऐसी अनेक स्त्रियाँ हैं, जिन पर प्रतिदिन अत्याचार होती हैं, लेकिन वे बोलने और प्रतिकार करने में असमर्थ हैं। तनु का अदम्य साहस उसे अपनी खोयी हुई प्रतिष्ठा वापस दिलाता है। उपन्यास में बाल मनोविज्ञान का चित्रण भी ख़ूबसूरती से किया गया है। अपनी माँ पर अत्याचार होते देखकर बच्चों पर क्या बीतती हैं, इसका भी यथार्थ अंकन किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ

1 अनामिका, मन माँझने की जरूरत, पृष्ठ 123

2 संपादक आनंद प्रकाश, युग परिबोध सितम्बर 2011, पृष्ठ 15

3 ऐंगेल्स, परिवार निजर संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति, पृष्ठ 69

4 सुषम बेदी, मोर्चे, पृष्ठ 18

5 वही, पृष्ठ 23

6 वही, पृष्ठ 7

7 वही, पृष्ठ 40

8 वही, पृष्ठ 79

9 वही, पृष्ठ 66

10 वही, पृष्ठ 93

11 वही, पृष्ठ 131

12 वही, पृष्ठ 189